चीड़ पहाड़ और पर्यावरण का दुश्मन नंबर एकः जंगली

चीड़ के पेड़ पहाड़ व पर्यावरण के दुश्मन नंबर एक हैं। इसके कारण न सिर्फ जमीन की नमी खत्म हो रही है बल्कि यह भू-स्खलन का भी बहुत बड़ा कारण है। इससे जंगलों में आग लगती है और पर्यावरण सुधारने के 25 से 30 साल तक के सभी प्रयास पर पानी फिर जाता है। इस लिये सरकार व समाज को पुराने अनुभवों से चेतते हुये मिश्रित , फलदार व चौड़ी पत्ती वाले पेड़ लगाने चाहिये। ये बातें पर्यावरणविद जगत सिंह जंगली ने आईएसबीटी के पास होटल में आयोजित पत्रकार वार्ता के दौरान कही।

जगत सिंह जंगली वृक्षारोपण करने व इसके प्रति जागरुकता फैलाने के लिये प्रसिद्ध हैं। शुक्रवार को वह हरेला पर्व पर आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम की जानकारी देने के लिये उत्तरांचल उत्थान परिषद की तरफ से आयोजित पत्रकार वार्ता में बोल रहे थे। तीन दिनों तक चलने वाले कार्यक्रम की जानकारी देने के बाद जंगली ने कहा कि अगर उत्तराखंड के पहाड़ को बचाना है तो सबसे पहले हमें पहाड़ को चीड़ विहिन करना होगा। अगर पहाड़ पर चीड़ हटाकर वहां अन्य पेड़ लगाये जायेंगे तो कई समस्याओं का खुद ब खुद समाधान निकलेगा। उन्होंने अपने अनुभव व वैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर बताया कि चीड़ के पेड़ की प्रकृति पानी सोखने की है। वह धरती के पानी को सोख कर हवा में उड़ा देते हैं। इससे जमीन की नमी खत्म हो जाती है। परिणाम स्वरूप मिट्टी कमजोर होती है और वहां छोटे पेड़ व घास नहीं पनप पाते। नतीजा जमीन के कमजोर होने का सिलसिला चलता रहता है। इसका खामियाजा मनूष्य को भू-स्खलन के रूप में चुकाना पड़ता है। चीड़ के पेड़ की बहुतायत के चलते गर्मी में आग जल्दी लग जाती है तथा चीड़ की लकड़ी के ज्वलनशील प्रकृति का होने के चलते आग न सिर्फ जल्द लग जाती है बल्कि वह तेजी से फैलती भी है। ऐसी आग से 25 से 30 सालों तक पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों पर पानी फिर जाता है।

इसके लिये सरकार व समाज को चीड़ का मोह छोड़ना होगा। उन्हें फलदार , मिश्रित व चौड़ी पत्ती वाले पेड़ लगाने होंगे। पर्यावरण की रक्षा में किसी एक तय को जरूत से ज्यादा प्राथमिकता देने की निति को भी बदलना होगा। ऐसे कदमों से ही सरकार पहाड़ व पर्यावरण की रक्षा कर सकती है। इस तरह के अच्छे कामों को सरकार हरेला पर्व से जोड़ सकती है। ऐसा करने से पर्यावारण , पहाड़ का संरक्षण, धार्मिक महत्व व भावना का समावेश होगा। इन सभी तयों के एक साथ जुड़ जाने से हमारा उद्देश्य पूरा होगा। इस दौरान दयानंद चंदोला, कमला पंत, राजेश थपलियाल, प्रवीण ममगाई माजूद रहे।

राष्ट्रीय सहारा (देहरादून), 16 July 2016